भुजङ्गप्रयात छन्द

भुजङ्गप्रयात छन्द की प्रकृति-

यह वार्णिक छन्द है।

भुजङ्गप्रयात छन्द का लक्षण-

भुजङ्गप्रयातं भवेद्यैश्चतुर्भिः।

अर्थात् चार यगणों से यक्त छन्द भुजङ्गप्रयात होता है।

उदाहरण-

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं
विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम् ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम् ॥

अन्य उदाहरण-

निराकारमोङ्कारमूलं तुरीयं
गिरा ग्यान गोतीतमीशं गिरीशम्।
करालं महाकाल कालं कृपालं
गुणागार संसारपारं नतोऽहम्।।

विशेष-

क) इस छन्द के प्रत्येक चरण में 12 अक्षर होते हैं।

ख) यह छन्द भुजङ्ग यानि के सर्प की गति का सा आभास देता है। यही इस छन्द के नामकरण का कारण हुआ है।

ग) यदि पादान्त में होती है।

घ) छन्द का स्वरूप इस प्रकार है-

।ऽऽ ।ऽऽ ।ऽऽ ।ऽऽ

Dhananjay Vasudeo Dwivedi